IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

तबला संगतकार के रूप में उस्ताद शेख दाऊद की भूमिका

हिमांशु जोशी

शोधार्थी, संगीत विभाग,

डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

सार – भारतीय संगीत को देखें तो हम पाते है कि कई भिन्न – भिन्न समय में संगीत के उत्थान के लिए कई कार्य व उसमें क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। हैदराबाद के मशहूर तबला उस्ताद दाऊद शेख दाऊद ने यही काम तबला संगति के क्षेत्र में किया। दाऊद साहब ने ऐसे समय में तबला संगति को विशिष्ट स्थान दिलाया जबकि तबला संगति एक दोयम दर्जे की कला मानी जाती थी। दाऊद साहब ने तबला संगत के महत्व को खुद भी समझा व इसे संगीत श्रोताओं तक भी पहुंचाया। आपने अपने वादन से अपनी बात को सिद्ध किया कि मंच पर मौजूद हर एक कलाकार चाहे वह मुख्य प्रस्तोता हो या फिर संगतकार सभी का अपनी विधा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करना महत्वपूर्ण है। उस्ताद शेख दाऊद ने तबला संगति का सम्मानित स्थिति तक पहुँचने में अत्यंत परिश्रम किया व उसे एक गौरवान्वित स्थिति में पहुंचाया। अपनी प्रतिभा व तबला कौशल से दाऊद साहब ने इस बात को सिद्ध किया कि किसी भी सांकेतिक कार्यक्रम की सफलता बहुत हद तक एक संगतकार पर निर्भर करती है। इसके साथ ही दाऊद साहब ने अपने कृत्यों द्वारा एक सफल संगतकार बनने के मार्ग का उद्घटन किया। दाऊद साहब ने अपने शिष्यों को एक सफल तबला संगतकार बनने के गुणों से अवगत कराया। हम देखते हैं कि तबला संगति के क्षेत्र में खुद को स्थापित कर दाऊद साहब ने एक उदाहरण पेश किया। अपनी शिष्य परंपरा द्वारा दाऊद साहब ने इस गुण को अधिकाधिक संगीत प्रेमियों तक पहुंचाया। संगीत क्षेत्र के तबला विधा में दाऊद साहब का दिया योगदान अतुलनीय है व आज भी संगीत साधकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना है।

फर्रूखाबाद घराने के प्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद शेख दाऊद, भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। आपने ताल शास्त्र की अभिव्यंजना करने में नए प्रतिमान स्थापित किए। आप उन महान संगीतज्ञों में से रहे जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन संगीत के प्रति समर्पित कर दिया। आप उन गिनती के कलाकारों में से हैं, जिन्होंने सांगीतिक परिवेश से ना होते हुए भी अपनी प्रतिभा, परिश्रम व तालीम के बल पर खुद को प्रतिष्ठित संगीतज्ञ के रूप में स्थापित किया। आपके असीम ज्ञान एवं तबला विधा में पारंगत होने के कारण आपको आदरपूर्वक 'हजरत' कहा जाता था। आपके वादन की खास बात थी कि आप बोलों के निकास व बोलों के संतुलन पर विशेष ध्यान देते थे। आपके वादन की श्रव्य गुणवत्ता भी अप्रतिम थी। इसी का लाभ आपको तबला संगति में प्राप्त हुआ। तबला वादन पर आपका अद्भुत नियंत्रण था। उस्ताद शेख दाऊद अपने एकल वादन के लिये तो प्रसिद्ध थे ही, लेकिन आपने तबला संगति के

क्षेत्र में जो ख्याति अर्जित की वह अतुलनीय है। तबला संगति के क्षेत्र में जो शोहरत उस्ताद शेख दाऊद ने कमाई वह किसी और कलाकार ने नहीं। उस्ताद शेख दाऊद ने तबला संगति को एक नया आयाम दिया। संगीत की कोई भी विधा हो, चाहे गायन या वादन, इन सभी के कलाकार आपकी संगति से पूर्ण तरह से संतुष्ट रहते थे।

दाऊद साहब को बचपन से ही अपने परिवार का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ था। सांगीतिक परिवेश ना होते हुए भी आपके माता–पिता ने आपको संगीत वाद्यों से परिचित कराया व उचित शिक्षा हेतु संगीत गुरू के पास भी भेजा। दाऊद साहब के शुरूआती उस्तादों ने उन्हें तबला वादन के अतिरिक्त गायन की भी शिक्षा दी थी। इस कारण उस्ताद शेख दाऊद गायन की बारीकियों को भी बहुत अच्छे से समझ लेते थे। तबला वादन में हाथ साधते ही दाऊद साहब इन बारीकियों के आधार पर संगति देने लगे व उसमें निखार लाए। आपके तबला वादन में जैसे–जैसे निखार आता गया, परिपक्वता आती गई, वैसे–वैसे आप एक संगतकार के रूप में उभर कर सामने आने लगे। कम उम्र से ही संगत के क्षेत्र में आप की वाहवाही होने लगी थी। आप जिन भी कलाकारों को तबला संगति प्रदान करते, वे सभी मुक्त कंठ से आप की प्रशंसा करने लगे।

भारतीय संगीत को देखें, तो हम पाते हैं कि कई कलाकारों ने भिन्न – भिन्न समय में संगीत के उत्थान के लिये कार्य किए व उस में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। दाऊद साहब ने यही काम तबला संगति के क्षेत्र में किया। यह आपकी तबला संगति का एक विशेष पहलू है। आपने तबला संगति को ऐसे समय पर प्रसिद्धि दिलवाई जबकि वह निचले दर्जे की कला समझी जाती थी। जिस कालखंड में उस्ताद शेख दाऊद ने तबला वादन को अपने कार्य क्षेत्र के रूप में चुना, उस समय संगतकार को दोयम दर्जे का कलाकार माना जाता था। तबला संगतकार को विशेष सम्मान नहीं दिया जाता था। उस कालखंड के कुछ वरिष्ठ दूरदर्शी संगीतज्ञों द्वारा किए गए प्रयासों के परिणाम स्वरूप तबला संगतकार की स्थिति में कुछ परिवर्तन होना प्रारंभ हो चुके थे, लेकिन वह पर्याप्त नहीं था। दाऊद साहब ने तबला साधकों की इस परेशानी को समझा व अपने चिंतन व मनन के द्वारा संगति के महत्व को दूसरों तक पहुंचाया। आपने इस बात को महसूस किया था कि अच्छी प्रस्तुति के लिये किसी मंच पर मौजूद सभी कलाकारों का आपसी सामंजस्य के साथ प्रस्तुति देना अत्यंत महत्वपूण है। मुख्य कलाकार की प्रस्तुति तो मायने रखती ही है लेकिन उसके साथ संगति प्रदान करने वाले कलाकारों का भी अच्छा प्रदर्शन करना नितांत आवश्यक होता है। दाऊद साहब ने इस बात को समझा कि एक अच्छा संगतकार कार्यक्रम के स्तर को नई ऊंचाइयों पर ले कर जा सकता है। अपनी प्रतिभा, परिश्रम, महान गुरूओं से प्राप्त शिक्षा व अपनी नवाचारी सोच के बल पर दाऊद साहब ने खुद को एक श्रेष्ठ तबला संगतकार के रूप में स्थापित किया। दाऊद साहब ने तबला संगत के महत्व को न केवल खुद समझा अपितु अपनी इस सोच को श्रोताओं तक भी पहुंचाया। आपने अपने वादन से इस बात को सिद्ध किया कि मंच पर मौजूद हर कलाकार की प्रस्तुति मायने रखती है। उस्ताद शेख दाऊद ने अपने वादन के द्वारा श्रोताओं को इस बात से परिचित कराया कि किसी भी कार्यक्रम का सफल या असफल होना काफी हद तक संगतकार पर निर्भर करता है।

दाऊद साहब ने तबला संगति को सम्मानित स्थिति में पहुंचाया। एक नई विचारधारा ने जन्म लिया जिसके अन्तर्गत सभी को यह एहसास हुआ कि संगीत में मुख्य कलाकार के अतिरिक्त संगतकार भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। दाऊद साहब के तबला वादन में ऐसे विलक्षण गुण थे कि वे मुख्य प्रस्तोता की प्रस्तुति को उभार कर श्रोताओं के समक्ष ले आते थे। आपकी तबला संगति की विशेषताओं का विश्लेषण करना सरल नहीं है क्योंकि दाऊद साहब का

तबला वादन बहुआयामी था। तबला संगति के क्षेत्र में उस्ताद शेख दाऊद ने कुछ ऐसी विशेषताओं को स्थापित किया जिन पर कार्य कर व अपनी प्रतिभा का प्रयोग कर कोई भी तबला वादक एक सफल संगतकार बन सकता है।

दाऊद साहब का मानना था कि एक सफल संगतकार बनने के लिये एक तबला वादक को गायन की शिक्षा प्राप्त करना भी अत्यंत आवश्यक है। उनका मानना था कि जब तक कोई तबला संगतकार गायक की गायन शैली को नहीं समझेगा तब तक वह उसके साथ बेहतर संगत नहीं कर सकता। दाऊद साहब का मानना था कि एक तबला वादक को मुख्य कलाकार के मनोभावों को ध्यान में रखकर ही तबला संगति देनी चाहिए।

तबला वादक के लिये कलाकार की मनोदशा, राग का भाव, गायन शैली इन सभ बिंदुओं को ध्यान में रखकर तबला संगति देना अत्यंत आवश्यक है। दाऊद साहब के अनुसार एक तबला वादक का अपने वादन में संतुलित होना भी अत्यंत आवश्यक है। जब तक कोई तबला वादक अपनी वादन में दाएं और बाएं तबले का संतुलन स्थापित नहीं कर लेता, तब तक वह एक अच्छा संगतकार या वादक नहीं बन सकता। तबला वादक का अपने वाद्य पर संतुलन ही साथी कलाकार को सहज होने में मदद करता है। सहज अवस्था में पहुँचकर ही मुख्य प्रस्तोता की संपूर्ण कला निखर कर सामने आती है। दाऊद साहब के अनुसार एक तबला वादक का बहुआयामी होना भी उसको एक सफल संगतकार बनने में मदद करता है। अपनी परंपरा को ध्यान में रखते हुए एक तबला वादक को अन्य घरानों की वादन शैली को भी समझ कर आत्मसात करना चाहिए। साथ ही एक तबला वादक के पास बंदिशों का समुचित भंडार होना आवश्यक है। दाऊद साहब का मानना था कि तबला वाद्य का पहला धर्म संगति प्रदान करना है। एक तबला वादक सफल कलाकार तभी बन सकता है जबकि वह एक अच्छे संगतकार के रूप में खुद को स्थापित करे। तबला संगत में एक संगतकार के रूप में वादक का उद्देश्य हमेशा मुख्य कलाकार की प्रस्तुति को निखारना होना चाहिए।

दाऊद साहब का मानना था कि एक तबला वादक को ताल के शास्त्रीय पक्ष को भी समझना चाहिए। एक तबला वादक को उन सभी कारणों का ज्ञान होना चाहिए जिस कारण किसी भी ताल की रचना की गई हो। इस बात को हम ऐसे समझ सकते है कि किसी भी ताल के धर्म को समझना या उसकी प्रयोग प्राविधि को जानना एक तबला वादक के लिये अत्यंत आवश्यक हो जाता है। ताल के स्वरूप को समझ कर ही कोई तबला वादक उस ताल का सही प्रयोग कर सकता है।

दाऊद साहब ने खुद भी इन सभी गुणों को आत्मसात किया था व इन्हीं के बल पर एक श्रेष्ठ मुकाम हासिल किया। उस्ताद शेख दाऊद उन कलाकारों की श्रेणी में आते हैं जिन्होंने अपने ज्ञान व विवेकशीलता के बल पर इस मानसिकता को बदलने में योगदान दिया, जिसमें समझा जाता था कि मुख्य प्रस्तोता की प्रस्तुति से ही कोई कार्यक्रम सफल होता है। दाऊद साहब की तैयारी अद्वितीय थी व तबला पर आपका नियंत्रण अद्भुत था। उस समय तकनीक के बहुत सुदृढ़ ना होने पर भी, आपका तबला की आवाज पर नियंत्रण कुछ ऐसा था कि आवाज के उतार–बढ़ाव सुनकर श्रोता हतप्रभ रह जाते। यह दाऊद साहब की घरानेदार तालीम व उनकी प्रतिभा का ही प्रताप थ कि इस मुश्किल वक्त व हालात में भी वह एक उत्तम तबला संगतकार के रूप में उभरकर सामने आए। यह उस्ताद शेख दाऊद की बहुत बड़ी उपलब्धि थी कि उनके गुण एवं योग्यता के कारण हर छोटे – बड़े स्तर के कलाकार यही इच्छा रखते थे कि उन्हें दाऊद साहब के साथ मंचासीन होने का सौभाग्य प्राप्त हो। एक तबला संगतकार के रूप में दाऊद साहब खुद को मुख्य प्रस्तोता से पीछे रखते थे। आपका प्रयास हमेशा यही रहता था कि किस प्रकार कार्यक्रम को सफल बनाया जाए।

आपने अपने शिष्यों में इन्हीं संस्कारों का आरोपण किया। दाऊद साहब ने अपने शिष्यों को श्रेष्ठ संगत के लिये कुछ मूल नियम याद रखने की हिदायत दी थी जिन्हें आपने अपने अनुभव से प्राप्त किया था। आपका अपने शिष्यों के लिये मुख्य संदेश या सबक यही था कि एक संगतकार के रूप में यदि हम मुख्य कलाकार के ऊपर हावी होने की कोशिश करेंगे तो यह केवल उसे परेशान करने वाली बात होगी। उन्होंने बताया कि एक तबला संगतकार का मुख्य कार्य प्रस्तोता को सहार देना है। दाऊद साहब ने इन्हीं गुणों का प्रचार अपने अनुयायियों के मध्य किया। अपने शिष्यों को उन्होंने एक श्रेष्ठ कलाकार होने के साथ ही श्रेष्ठ मनुष्य बनने की भी प्रेरणा दी। दाऊद साहब के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि यही रही कि अपने 60 वर्षो की संगीत यात्रा में उन्होंने लगभग 3 पीढ़ी के कलाकारों के साथ तबला संगत करी व विभिन्न जगहों का भ्रमण किया एवं कार्यक्रम किए। आपके वादन का माधुर्य और आपकी संगीत की समझ कुछ ऐसी थी कि मानो आप अपने साथी कलाकार की मनोदशा को भांप लेते थे। आप उसकी मनोदशा, प्रवृत्ति, परंपरा, मन के भाव, इन सभी को ध्यान में रखकर तबला संगत किया करते थे। इतने मनन के पश्चात् की गई तबला संगत से जो माहौल बन कर आता था, जो रस निष्पत्ति होती थी श्रोतागण उससे भाव विभोर हो उठते थे। अपने वादन में संयम रखना व सही समय आने पर आवश्यकता अनुसार वादन से श्रोताओं को हतप्रभ कर देना, यही आपकी विद्वता का असली परिचायक था। यह एक दैवीय घटना ही मानी जाएगी की मात्र 16 वर्ष की उम्र में आपको अपना पहला मंचीय अनुभव प्राप्त हुआ था। आपका सौभाग्य माना जाएगा कि पहली प्रस्तुति में आपको संगीत जगत की महानतम हस्ती रहे उस्ताद अब्दुल करीम खान साहब के साथ संगति करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ था। संगतकार के रूप में दाऊद साहब की एक बहुत बड़ी उपलब्धि यह रही कि उन्होंने लगभग लगभग हर तरह के वाद्य के साथ तबला संगत की। यह एक बड़ी बात है क्योंकि हर वाद्य की अपनी अलग प्रकृति होती है। जहां एक तरफ वीणा, सुरबहार आदि वाद्य अपने आप में गंभीरता लिये हुए होते हैं। तो वहीं दूसरी ओर सितार, बांसुरी, संतूर आदि वाद्य अपने आप में चंचलता व चपलता लिये हुए हैं। दाऊद साहब ने इन सभी वाद्यों के साथ तबला संगति की व उसे पूरी ईमानदारी के साथ निभाया। ऐसा कोई कलाकार नहीं रहा जो कि आपकी तबला संगति से पूर्णतः संतुष्ट ना हुआ हो। एक तबला संगतकार के रूप में दाऊद साहब ने बच्चों से लेकर वरिष्ठ कलाकारों तक सभी आयु वर्ग व हर स्तर के कलाकार को तबला संगति प्रदान की थी। उस्ताद शेख का बौद्धिक स्तर अपने समय से काफी आगे था। आपका मुख्य उद्देश्य अपने मानसिक स्तर को बढ़ाना व अपने वादन में अधिक से अधिक परिपक्वता लाना था। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आपने अपने समय के श्रेष्ठ गुरूओं से सबक प्राप्त किया था। आपने गायन की विभिन्न शैलियों के साथ परिपक्वता व पूर्णता प्रदान करते हुए संगति प्रदान की। दाऊद साहब ने जब ध्रुपद धमार के साथ वादन किया तो वह तबले को खुले हाथ से पखावज की तरह ही बजाते थे। वह बंदिशें भी शुद्ध रूप से उसकी ही प्रयोग में लाते थे। ख्याल गायकी के साथ संगत करते हुए आप उसकी हर छोटी से छोटी बारीकी का ध्यान रखते थे। जब आप विलंबित ख्याल के साथ संगत करते तो उसकी गंभीरता को बनाए रखते। व जब छोटे ख्याल के साथ संगत करते तो उसकी चंचलता व चपलता को मन में रखकर संगत प्रदान किया करते थे। गायन की उप शास्त्रीय विधाएं जैसे की ठुमरी, दादरा, गज़ल व भजन के साथ संगत करते समय आप पूरी तरह से गायन शैली, गायक की क्षमता, बंदिश के बोलों को ध्यान में रखकर संगति प्रदान किया करते थे।

उस्ताद शेख दाऊद मानसिक स्तर से अपने समय से काफी आगे थे। आप का मुख्य उद्देश्य बौद्धिक उन्नति करना व अपने वादन में परिपक्वता लाना रहा। दाऊद साहब एक दूरदर्शी कलाकार थे। आपने तबला संगति के महत्व को जानकर अपने शिष्यों में भी एक श्रेष्ठ तबला संगतकार के गुणों का बीजारोपण किया। आपके शिष्य जो कि आप की परंपरा के ध्वजवाहक के रूप में काम कर रहे हैं उन्होंने भी, न सिर्फ एकल वादन के क्षेत्र में नाम कमाया बल्कि वे सभी एक संगतकार के रूप में खुद को स्थापित करने में सफल हुए। तबला वादन के क्षेत्र में किए कार्य व अपने योगदान के लिए संगीत विद्वान उस्ताद शेख दाऊद का नाम आज भी सम्मान से लेते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. दास, डॉ0 रामशंकर, तबला कौमुदी भाग – 1/2/3, रामचन्द्र संगीतालय, ग्वालियर, 1995।
2. मिश्र, पं0 छोटे लाल, ताल प्रबंध, कनिष्क पब्लिसर्स व डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2006।
3. शर्मा, भगवत शरण, ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय, हाथरस, 2010।
4. श्रीवास्तव, गिरीश चन्द्र, ताल परिचय, भाग – 1/2/3, संगीत सदन, इलाहाबाद , 2010।

साक्षात्कार :–

1. ड0 शब्बीर निसार (उ0 शेख दाऊद के पुत्र) से साक्षात्कार द्वारा तथ्य संकलन किया गया।
2. डॉ0 विजय कृष्ण (उ0 शेख दाऊद के शिष्य) से साक्षात्कार द्वारा तथ्य संकलन किया गया।